19वीं सदी के अंत में पश्चिमी राजस्थान का आर्थिक प्रबन्धन : एक अध्ययन

*डॉ. श्वेता जैमन शर्मा

शोध सारांश

अठारहवीं सदी में राजस्थान के काल से गुजर रहा था। अनेक नई सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाएँ राजस्थान में स्थापित हो रही थीं। अतः यह सदी राजस्थान के आधुनिक काल का आरम्भ थी। औद्योगिक एवं व्यापारिक परिवर्तन भी इस सदी में सर्वाधिक हुए, किन्तु अभी तक स्थायित्व नहीं आ पाया था।

इस शोध प्रबंधन के निष्कर्ष में कहा जाता है कि मध्यकाल में राजस्थान का व्यापार समृद्ध था। मध्यकाल में राजस्थान की व्यापारिक समृद्धि के अनेक कारण थे। सबसे पहला कारण तो मध्यकाल में इस प्रदेश में शान्ति रहना था। मुगल संरक्षण प्राप्त कर लेने के पश्चात् राजस्थान में लगभग शान्ति स्थापित हो गयी थी। व्यापारिक गतिविधियों के संचालन एवं व्यापारिक विकास हेतु शान्त प्रदेश बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। सही अर्थो में देखा जाये तो राजस्थान उत्तरी भारत का सबसे शान्त क्षेत्र था। अतएव, मध्यकाल में राजस्थान उत्तरी भारत के प्रमुख व्यापारिक स्थल के रूप में विकसित हुआ। मध्यकाल में पश्चिमी भारत स्थित सूरत का बन्दरगहा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का था, जिससे राजस्थान के विभिन्न व्यापारिक केन्द्र भली–भाँति जुड़े हुए थे। अतः राजस्थान मध्यकाल में न केवल राष्ट्रीय वरन् अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

पश्चिमी राजस्थान इसी समय शान्त क्षेत्र था। यहां से पूर्वी भारत व मध्य एशिया को जोड़ने वाला व्यापारिक मार्ग निकलता था। इस कारण यहां के लोगों को मार्ग कर प्राप्त होता था।

पश्चिमी राजस्थान के वीरों की गाथाएँ चाहे कितनी भी हों, किन्तु राजस्थान में राज्यों की सत्ता कभी शक्तिशाली नहीं रही। पश्चिमी राजस्थान के शासकों की राजनैतिक सत्ता हमेशा क्षीण रही। यहाँ के राज्य सदैव भारत की विशाल राजनीतिक शक्तियों की दया पर ही टिके रहे। अतः पश्चिमी राजस्थान में अराजकता एवं राजनीतिक अव्यवस्था की सम्भावना बनी रहती थी। जब तक भारत के मुगलों की सत्ता मजबूती के साथ चलती रही तब तक पश्चिमी राजस्थान में व्यवस्था रही। किन्तु औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर होने लगा, तो पश्चिमी राजस्थान में ही नहीं सम्पूर्ण राजस्थान में अराजकता एवं अशान्ति के बादल मण्डराने लगे।

मुगल सत्ता के पटाक्षेप के बाद पेशवों के नेतृत्व में मराठा शक्ति का पुररोत्थान हुआ। मराठे सिद्धांतहीन राजनीति एवं लूट–खसोट के आदि थे। पश्चिमी राजस्थान के शासकों एवं जागीरदारों के आपसी विवादों में मराठों द्वारा हस्तक्षेप करने का अवसर मिलना राजस्थान की राजनीतिक कमजोर को इंगित करता है। मराठे इन विवादों में कुछ धन के बदले एक पक्ष के साथ खड़े होते थे एवं दूसरे पक्ष द्वारा अधिक धन मिलने के लोभ में पक्ष भी बदल लेते थे। बिल्लियों के विवाद में बन्दर न्यायाधीश की भूमिका निभाने में मराठे अतीव कुशल थे। मराठे अपने लाभ हेतु राजस्थान में राजाओं एवं जागीरदारों के मध्य विवाद उत्पन्न करवाकर उनसे लाभ उठाते थे। सम्बन्धित राजा या जागरदार से धन न मिलने की स्थिति में मराठों के आक्रमण बड़े भंयकर होते थे। मराठों के सैनिक अभियानों द्वारा उत्पन्न पश्चिमी राजस्थान की अशान्ति एवं आर्थिक बर्बादी ने राजस्थान में विकसित व्यापार को तहस–नहस कर दिया। लगभग आधी सदी तक पश्चिमी राजस्थान में ही नहीं सम्पूर्ण राजस्थान मराठों की लूट का शिकार बना रहा। 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में मराठा प्रभाव के परिणाम राजस्थान के लिए घातक सिद्ध हुए। मराठों के आतंक से छुटकारा प्राप्त करने हेतु राजस्थान के शासक अंग्रेजों की ओर उन्मुख हुए, उन्होनें मराठों से मुक्त होने के लिए अंग्रेजों की अधीनता भी सहर्ष स्वीकार कर ली। पश्चिमी राजस्थान में मराठों के राजनीतिक प्रभाव के दौरान यदि देखा जाये तो व्यापारिक दृष्टि से राजस्थान के पतन का युग था। पश्चिमी राजस्थान की राजनीतिक शक्ति की

कलई खुली चुकी थी। यहाँ के तथाकथित शासक आत्मरक्षा करने में ही असमर्थ थे, तो व्यापारियों एवं अन्य जनता की रक्षा की सामर्थ्य कहां से होती ?

मराठों एंव पिण्डारियों की लूट के कारण राजस्थान में भय, आतंक एवं अराजकता व्याप्त हो गयी थी। उपरोक्त आतंक से मुक्ति का रास्ता केवल अंग्रेजों की शरण में जाना ही रह गया था। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक कारण थे, जिनके परिणामस्वरूप राजस्थान में अंग्रेजी सत्ता की सर्वोच्यता स्थापित हुई। कारण तलाश करें तो पायेंगे कि मुख्य कारण पश्चिम राजस्थान की प्रकृति एवं स्वभाव में विद्यमान था। आंग्ल–मराठा संघर्ष में अंग्रेस सफलता की ओर बढ़ रहे थे एवं मराठा शक्ति पतन की ओर अग्रसर हो रही थी। मराठों के पतन के बाद उनके प्रभाव क्षेत्रों में अंग्रेजों का प्रभाव स्वाभाविक रूप से बढ़ना ही था। किन्तु जैसा कि पूर्व में कहा चुका है पश्चिमी राजस्थान कभी स्वतंत्र रह ही नहीं सका। अर्थात् उसकी नियत भारत की विशाल शक्तियों के साथ ही जुड़ी रही। जब अंग्रेज भारत की सबसे बड़ी शक्ति बन चुके थे, तो पश्चिमी राजस्थान का उनके नियंत्रण से पृथक रहना संभव भी नहीं रह गया था। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि राजस्थान में कुछ ऐसी दशाएँ उत्पन्न हो गयी थीं, जिनके कारण राजस्थान में अंग्रेजों के विरोध के स्थान पर स्वागत किया गया। अर्थात् अंग्रेज राजस्थान की अनेक परेशानियों के त्राता नजर आने लगे।

1818 ई. तक सम्पूर्ण राजस्थान के राज्य ब्रिटिश अधीनता स्वीकार कर चुके थे। राजस्थान में अंग्रेजों की सर्वोच्चता की स्थापना के उपरान्त राजस्थान में अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का जन्म हुआ। अंग्रेजी संरक्षण पश्चिमी राजस्थान के ही नहीं सम्पूर्ण राजस्थान के हित में नहीं था। अंग्रेजों ने पश्चिमी राजस्थान में ही नहीं और जगह भी प्रशासनिक व्यवस्था बड़ी चालाकी से स्थापित की थीं ताकि उनके आर्थिक हित बने रहें। साथ ही उनके आर्थिक, औपनिवेशिक एवं राजनीतिक हित तो पूरे होते रहे, किन्तु उनके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं थी।

सिद्धान्नतः अंग्रेजों ने पश्चिमी राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों के साथ जो सहायक संधि की थी, उसमें यह उल्लेख था कि किसी भी राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा, लेकिन राजस्थान के राज्य अधीनता स्वीकार करने के बाद अंग्रेज उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने शुरू हो गये थे। राज्यों की पृथक प्रशासनिक व्यवस्था के समानान्तर अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की गई, जिससे अंग्रेजी साम्राज्यवाद का हित का साधन सुव्यवस्थित ढंग से होता रहे। नई व्यवस्था में पश्चिमी राजस्थान के साथ–साथ अन्य राज्यों पर भी आर्थिक–भार बढ़ गया था, जिसकी पूर्ति करो में वृद्धि के द्वारा ही संभव थी। परिणामतः पश्चिमी राजस्थान में नई कर एवं राजस्व पद्धति का आरंभ हुआ। नई कर एवं राजस्व व्यवस्था ने पश्चिमी राजस्थान की जनता के आर्थिक शोषण को बढ़ावा दिया, जो उनकी आर्थिक बदहाली का कारण बनी।

1878 के बाद से पश्चिमी राजस्थान में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान में नवीन भूमि बन्दोबस्त अंग्रेजों की पद्धति पर आरम्भ हुई। इन बन्दोबस्तों का उद्देश्य न तो कृषि क्षेत्र में विकास करना था एवं न ही कृषकों की कार्य दशाओं में सुधार। एकमात्र उद्देश्य नये बन्दोबस्तों के माध्यम से अधिक से अधिक धन प्राप्त करना था। इस प्रकार नये बन्दोबस्तों ने कृषक एवं कृषि दोनों की निर्धनता को बढ़ावा दिया। जब कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होती है तो कृषक दोनों की समृद्धि व्यापारिक एवं औद्योगिक विकास में सहायक होती हैं किन्तु नई व्यवस्था के परिणामस्वरूप राजस्थान के आर्थिक विकास की प्रक्रिया ही अवरूद्ध हो गयी।

विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पश्चिमी राजस्थान पर अंग्रेजी सत्ता की सर्वोच्चता के बड़े भयानक आर्थिक परिणाम निकले है। कुटीर उद्योगों का पतन एक खतरनाक परिणाम ही था।

कुटीर उद्योगों के पतन के परिणामस्वरूप उनमें संलग्न जनसंख्या का भार कृषिर पर आ पड़ा, जिसका कृषि पर विपरीत प्रभाव पड़ा। पश्चिमी राजस्थान की परम्परागत अर्थव्यवस्था को अंग्रेजी प्रभाव ने चकनाचूर कर दिया एवं जो नई अर्थव्यवस्था स्थापित की गई, वह शुद्ध रूप से साम्राज्यवादी हितों की साधक थी। अंग्रेजों ने पश्चिमी राजस्थान की दो महत्वपूर्ण व्यापारिक महत्व की वस्तुओं नमक एवं अफीम के व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था। पश्चिमी राजस्थान में नमक उत्पादन को साम्राज्यवादी लाभों को ध्यान में रखकर सीमित एवं नियंत्रित कर दिया गया। नमक व्यवसाय में कार्यरत अनेक लोग बेरोगजार हो गए। बदलते आर्थिक सन्दर्भो में राजस्थान से व्यापारी वर्ग का पलायन भी अंग्रेजों की सर्वोच्यता की स्थापना का परिणाम था। पश्चिमी राजस्थान की अर्थव्यवस्था

का अंग्रेजों ने औपनिवेशीकरण कर दिया, जिससे आधार भूत आर्थिक विकास की सम्भावनाएँ भी लुप्त हो गयी। 19वीं सदी के पश्चिमी राजस्थान की व्यापारिक एवं औद्योगिक दशा का अध्ययन स्पष्ट करता है कि यह युग पश्चिमी राजस्थान के साथ ही सम्पूर्ण राजस्थान के पराभव का युग था। इस युग को संक्रमण काल की परिभाषा दी जा सकती है। मध्यकाल में पश्चिमी राजस्थान के उद्योग विकासशील अवस्था में थे एवं उपर्युक्त परिस्थितियों के होने पर उनके विकास की भरपूर सम्भावना बनी थी। किन्तु 18वी सदी की अराजकता एवं 19वीं सदी के आरम्भिक वर्षो में साम्राज्यवादी शक्ति के प्रभुत्व की स्थापना ने पश्चिमी राजस्थान में औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं को समाप्त कर दिया था।

पश्चिमी राजस्थान में विभिन्न धातुओं एवं कीमती पत्थरों के अथाह भण्डार थे एवं पश्चिमी राजस्थान में स्थानीय उपभोग हेतु इनका खनन कार्य भी होता था। लोहा एवं तांबा संगमरमर खनन कार्य यहाँ प्राचीन काल से ही चला आ रहा था। अंग्रेजी सत्ता की स्थापना के बाद इन धातुओं का यूरोप में आयात किया जाने लगा, जिसने स्थानीय धातु शोधन एवं उत्पादन को विपरीत रूप में प्रभावित किया। पश्चिमी राजस्थान में प्राप्त विभिन्न खनिजों पर आधारित उद्योगो का विकास सम्भव था। किन्तु, 19वीं सदी के आरम्भ से ही उत्पन्न नई परिस्थितियों ने इन सम्भावनाओं को समाप्त कर दिया। 19वीं सदी में जो खनिजों का खनन कार्य अस्तित्व में था, वह परम्परागत एवं पुराने ढंग पर ही आधारित था। आधुनिक उपकरणों का प्रयोग भी आरम्भ नहीं हो पाया था।

धातुओं के अतिरिक्त पश्चिमी राजस्थान में विभिन्न प्रकार के पत्थरों का तो असीमित भण्डार था। किन्तु पत्थरों पर आधारित उद्योग 19वीं सदी में लगभग नगण्य थे।

मध्यकाल में पत्थरों का खनन कार्य विकसित अवश्य था। पत्थरों की खाने अंग्रेजी प्रभाव से बन्द तो नहीं हुई, किन्तु इस पर विपरीत प्रभाव अवश्य पड़ा। राजाओं एवं सामन्तों की जो विशाल भवनों के निर्माण में रूचि रखते थे, सामर्थ्य नये आर्थिक दबाव के कारण समाप्त हो गयी थी।

उन्नीसवीं सभी के अन्तिम वर्षो में कोयले की प्राप्ति को प्राकृतिक वरदान की संज्ञा दी जा सकती है। इस समय बीकानेर राज्य के पालना नामक स्थान पर कोयले का खान कार्य आरम्भ हुआ। इस युग की आवश्यकतानुसार खजिन का मिलना अपने आप में महत्वपूर्ण बात थी। पश्चिमी राजस्थान में कोयले की प्राप्ति उस समय हुई, जब उन्नीसवीं सदी के अन्त में राजस्थान के खनन कार्य को बढ़ावा देने की योजना अंग्रेस शासक बना रहे थे।

उन्नीसवीं सदी में उद्योग पर अंग्रेजी साम्राज्य के विपरीत प्रभावों के उपरान्त भी राजस्थन में उद्योग अस्तित्व में रहे। इन उद्योगों को अधिकतर उत्पादन आन्तरिक एवं स्थानीय उपभोग तक सीमित था। अतः इन उद्योगों का स्वरूप लघुस्तरीय ही था। पश्चिमी राजस्थान के बाजारों में अंग्रेजी काल के आगमन के पश्चिमी राजस्थान के कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास को अवरूद्ध कर दिया। पश्चिमी राजस्थान के उत्पादनों के विदेशों एवं भारत के अन्य प्रान्तों के बाजार नई व्यवस्था में बन्द ही हो गये थे। नमक उद्योग का इस काल में भी महत्वपूर्ण स्थान बना रहा। पहले की तुलना में नमक उत्पादन की मात्रा में गिरावटी आयी थी।

सूती एवं ऊनी वस्त्र उद्योग स्थानीय स्तर पर कार्यरत थे। इनमें कलात्मक कार्य अपनी विशेषता लिए हुए थे। शिल्पियों द्वारा कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन जारी रहा। किन्तु, बदले राजनीतिक परिवेश में उनके संरक्षकों का अभाव अवश्य पैदा हो गया था, जिसके कारण इनके विकास की गति मन्द पड़ गयी थी। धातु के बर्तनों का उत्पादन, हथियार उत्पादन, हाथी दांत, लाख, आभूषण, खिलौन आदि का कार्य मन्द गति से चल रहा था। आन्तरिक उपभोग हेतु रस्सी, सुतली एवं टाट पट्टी उत्पादन विभिन्न स्थानों पर कुटीर उद्योगों द्वारा होता था, तथा इसी स्तर पर कागज उत्पादन कार्य भी होता था। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक में कुछ आधुनिक उद्योगों की स्थापना हुई थी, जो कपास एवं सूती कपड़े से सम्बन्धित थे।

उन्नीसवीं सदी का पश्चिमी राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछडेपन की स्थिति में ही रहा। औद्योगिक पिछड़ेपन के कारणों प्रमुख रूप से अंग्रेजों की औपनिवेशिक व्यवस्था थी, जिसका आधार ही औद्योगिक पिछड़ापन था। इसके अतिरिक्त तकनीकी पिछड़ापन, पूंजी का अभाव, पश्चिमी राजस्थान के शासकों की उदासीनता एवं व्यापारी वर्ग का पलायन राजस्थान के औद्योगिक पिछड़ेपन के सहायक कारण थे।

पश्चिमी राजस्थान के व्यापार एवं वाणिज्य की स्थिति भी उन्नीसवीं सदी में अधिक संतोषकनक नहीं थी। पश्चिमी राजस्थान के व्यापार के बाहर स्थित बाजारों के बन्द हो जाने के कारण मुख्यतः आन्तरिक व्यापार की शेष बचा था। पश्चिमी राजस्थान के विभिन्न राज्यों की राजधानियों के अतिरिक्त राजस्थान के बड़े राज्यों के उदयपुर में भीलवाड़ा, बीकानेर में चुरू एवं राजगढ़, जयपुर में मालपुरा एवं जोधपुर में पाली प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे। पश्चिमी राजस्थान के अलावा राजस्थान के अलावा राजस्थान के शेष भागों के व्यापारिक केन्द्रों के विकास में अंग्रेजों ने भारी रूचि ली, क्योंकि वे इन केन्द्रों को अपने उत्पादनों की बिक्री का केन्द्र बनाना चाहते थे। परम्परागत व्यापार के पराभव के कारण पश्चिमी राजस्थान का व्यापारिक समुदाय जीविकोपार्जन हेतु राजस्थान के बाहर के प्रदेशों में पलायन कर गया। इस पलायन के अनेक विपरीत परिणाम निकले।

उन्नीसवीं सदी में पश्चिमी राजस्थान के व्यापार को उन्नत अवस्था में नहीं माना जा सकता है। साथ ही लोगों की आर्थिक व्यवस्था अति दशनीय स्थिति में थी। क्योंकि पश्चिमी राजस्थान से व्यापारिक समुदाय यहाँ से भारत के अन्य भागों में व्यापार करने के लिए जा बसे थे। पश्चिमी राजस्थान के माल के बाजारों के सीमित होने पर व्यापार पर विपरीत प्रभाव पड़ा। इस समय परिवहन के साधन भी परम्परागत ही रहे। मुख्यतः ऊटों, बैलों, बैलगाड़ियों, घोड़ो–टट्टुओं, ऊँट गाड़ियों, गधों आदि का उपयोग परिवहन में होता था। माल ढोने वाले परम्परागत समुदाय, बनजारे का महत्व अभी बना हुआ था। किन्तु, नये संदर्शो में उनका व्यवसाय पतनोन्मुख था। उन्नीसवीं सदी के अनितम दो दशकों में सड़क, रेल व डाक तार का आरम्भ हुआ था जो परिवहन एवं संचार का आधुनिकीकरण कहा जा सकता है। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक स्थानीय संचार एवं परिवहन व्यवस्था अधिक विकसित नहीं हो पायी। इनका व्यापारिक लाभ तो बीसवीं सदी में ही मिल पाया था।

अन्त में कहा जा सकता है कि उन्नीसवीं सदी का पश्चिमी राजस्थान परिवर्तन एवं संक्रमण के काल से गुजर रहा था। परम्परागत एवं उद्योगों के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा था। इन क्षेत्रों में कुछ आधार भूत प्रवृतियाँ जन्म ले रही थी जिनका विकसित रूप हमारे को बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में दिखायी देता है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि पश्चिमी राजस्थान की आर्थिक दशा 19वीं सदी में दयनीय थी।

****शोधार्थी**
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(हिन्दी पुस्तके)

1.	ओझा, गौरी शंकर, हीराचन्द	:	जोधपुर राज्य का इतिहास भाग–2
2.	ओझा, गौरी शंकर, हीराचन्द	:	बीकानेर राज्य का इतिहास
3.	आसोपा, रामकर्ण	:	मारवाड का मूल इतिहास
4.	ओझा, जी.एच.	:	जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 1, 2 अजमेर 1938, 1941
5.	ओझा, जी.एच.	:	बीकानेर राज्य का इतिहास, अजमेर 1930
6.	ओझा, जी.एच.	:	राजपुताने का इतिहास भाग 1, 3
7.	बनर्जी, ए.सी.	:	राजपूत स्टडीज

8.	बछोला, डॉ. छेतसिंह	:	राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा
9.	ऐग्रीस, पी.	:	मारवाड़ का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, जोधपुर, 1991
10.	भार्गव, डॉ. बीस. एस.	:	राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण
11.	चौधरी, रामनारायण	:	आधुनिक राजस्थान का उत्थान
12.	गहलोत, जगदीश सिंह	:	राजपुताना का इतिहास भाग 1, 3
13.	गुप्ता, डॉ. श्रीमती निर्मला	:	राजस्थान अर्थ व्यवस्था से व्यवस्था की ओर
14.	गुप्ता, बी.पी.	:	राजस्थान की अर्थव्यवस्था
15.	जैन, डॉ. एम.एस.	:	आधुनिक राजस्थान का इतिहास
16.	लख्मीचंद	:	तवारीख जैसलमेर
17.	मेहता, पी.एस.	:	हमारा राजस्थान
18.	मयक, डॉ. मांगीलाल	:	जोधपुर का इतिहास
19.	मुंशी देवी प्रसाद	:	राजपुताने के राजाओं का चरित्र, मुरादाबाद, 1989
20.	नैणसी	:	ख्यात संस्करण प्रथम, आर.ओ.आर.आई. जोधपुर
21.	पानगडिया, बी.एल.	:	राजस्थान का इतिहास
22.	पावा, डॉ. सरोज एवं शर्मा, हरि शंकर	:	राजस्थान का इतिहास
23.	पांडेय, कोठारी	:	राजस्थान में व्यापार एवं वाणिज्य, भाग–1, जयपुर–2001
24.	रेऊ, बी.एन.	:	मारवाड़ का इतिहास भाग–1, 2
25.	राव, वी.एन.	:	मारवाड़ का इतिहास भाग–2 जोधपुर, 1938
26.	शर्मा, जी.एन.	:	राजस्थान का इतिहास, सोरठा, जयपुर, 1973
27.	शर्मा, के.आर.	:	19वीं सदी के राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, जयपुर, 1974
28.	शंकर, गिरीजा	:	मारवाड़ी व्यापारी, बीकानेर, 1988
29.	शर्मा और व्यास	:	राजस्थान का इतिहास
30.	सिंह, रघुवीर	:	पूर्व आधुनिक राजस्थान 1527 से 1947 ई., उदयपुर 1931
31.	शर्मा, डॉ. गोपीनाथ	:	राजस्थान का इतिहास
32.	शर्मा, डॉ. दशरथ	:	राजस्थान थ्रू दि एजेज
33.	डॉ., सत्य प्रकाश	:	भारत का इतिहास राजपूत काल
34.	टोड, जेम्स	:	राजपूत कुलों का इतिहास, जयपुर 1963
35.	टोड, कर्नल	:	राजस्थान का इतिहास

36.	टकनेट, डी.के.	:	मारवाड़ी समाज भाग–1, 2 जयपुर, 1989, 1990
37.	टिम्बर्ग	:	मारवाड़ी समाज भाग – 1, दिल्ली, 1978
38.	डॉ. गौड ही, ओझा	:	राजपुताना का इतिहास
39.	डॉ. गुप्ता व ओझा	:	राजस्थान का इतिहास
40.	डॉ. रामेश्वर प्रसाद	:	राजस्थान रोड एटलस
41.	कर्नल टॉड	:	पश्चिमी भारत की यात्रा
42.	स. सुखवीर सिंह गहलोत	:	युग–युगीन राजस्थान
43.	डॉ. बृजकिशोर शर्मा	:	आधुनिक राजस्थान का आर्थिक इतिहास
44.	डॉ. देव कोठारी, ललित पांडे	:	राजस्थान के व्यापार और वाणिज्य
45.	डॉ. महेन्द्र कुमार नगर	:	मारवाड़ के राठौड़ व अन्य राठौड़ रियासतों के नरेशों की वंशावली एवं राठौड़ों की प्रमुख शाखाएँ (चार्ट)
46.	पं. विश्वेश्वर नाथ रेड़	:	मारवाड़ का इतिहास भाग–1 व 2
47.	बी.एल. भादानी	:	मालाणी का इतिहास
48.	डॉ. हुकमसिंह भाटी	:	मारवाड़ रा ठिकाना री विगत
49.	डॉ. हुकमसिंह भाटी	:	मारवाड़ री ख्यात
50.	डॉ. विक्रम सिंह भाटी	:	मूंदियाड़ री ख्यात (जोधपुर राज्य का इतिहास)
51.	डॉ. हरि वल्लभ माहेश्वरी	:	जैसलमेर का इतिहास
52.	अनु. मिश्र एवं देवी प्रसाद	:	जैसलमेर का इतिहास–टॉड
53.	नन्द किशोर शर्मा	:	जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास
54.	बलदेव प्रसाद मिश्रा	:	बीकानेर राज्य का इतिहास एवं व्यापारिक शब्दकोश